शिव जयन्ति का महत्व

शिव जयन्ति का त्यौहार को हर वर्ष मनाते हैं और इस पर्व पर शिव की मूर्ति पर जल, दुध तथा बेल पत्र एवं फूल आदि चढाते हैं, परन्तु यह सब करते हुए भी भक्तगणों में से बहुत कम ही इस पर्व के वास्तविक रहस्य को जानते हैं शिव के यर्थाथ स्वरूप को भी बहुत कम लोग जानते हैं। बिना परिचय के किसी की स्मृति और उपासना का सम्पूर्ण लाभ नही मिल सकता।

वास्तव में शिव स्वयं उस निराकार परमपिता परमात्मा का द्योतक है जो सारी सृष्टि का पिता है और शिवलिंग अथवा ज्यार्तिलिंगम उस पिता का अंगुष्ठाकार ज्योति स्वरूप है, और परमधाम का निवासी है वह पिता कल्प-कल्प कलियुग के अंत और सतयुग के आरम्भ के संगम पर अनेक धर्मों का विनाश और एक सत्य धर्म की स्थापना करने हेतु अवतरित होकर हम मनुष्यात्माओं को सहज ज्ञान सुनाते और सहज राजयोग सिखलाते हैं इस ज्ञान-योगबल से सारी आत्मायें पवित्र बनती है पवित्र बनकर सतयुगी दैवी सृष्टि नियामक बनती है। इन कर्तव्यों के कारण ही उस पिता परमात्मा के इतनी महिमा गायी जाती है इस शिवलिग की महिमा अनेक नामों से गायी जाती है क्योकि जैसे-जैसे कर्तव्य वैसे-वैसे नाम उसे सोमनाथ कहते है, क्योंकि उसने ज्ञान का सोमरस हम मनुष्यात्माओं को पिलाया है इसलिए भूतेश्वर कहते हैं, क्योंकि हमें माया रूपी पाँच विकारों की भूतों से बचाया है इसी प्रकार से ओंकारेश्वर, विश्वेश्वर, महाकालेश्वर, अमरनाथ, जगन्नाथ, विश्वनाथ आदि विभिन्न नाम उस एक शिव परमात्मा के विभिन्न कर्तव्यों पर पड़ें है शिवजयन्ति और वर्तमान काल आजकल जयन्तियां आदि मनाने की रस्म बहुत हो गयी हैं और इसी कारण यह जानना भी अच्छा ही होगा, कि शिव जयन्ति का वर्तमान काल से क्या संबंध है जयन्ति मनाने का रहस्य तो यही होता है कि हम जिनकी जयन्ति मनाते हैं उन महान् व्यक्तियों के जीवन से जनता अपने जीवन का लक्ष्य उँचा रखें ताकि भारत अथवा और भी किसी देश का वह महान् नागरिक बने, बच्चों को इतिहास पढाने का यही लक्ष्य रहता है कि आज के बच्चों के हाथ कल देश की बागड़ोर होगी। शिवजयन्ति मनाने से भी हम आत्मायें अपने पारलौकिक पतित पावन परमपिता परमात्मा की जीवन गाथा को जानते और यही निश्चय कहती है कि इस सृष्टि पर सभी मनुष्य आत्मायें उस ही पिता की संतान हैं और सभी आपस में बिना भेदभाव के भाई-भाई हैं अर्थात हम आत्मिक निश्चय बुद्धि बनते हैं निसके कारण यह अद्वैतमत को जानता है कि सभी मनुष्य एक परमात्मा पिता, शिक्षक और सतगुरू से ही अपना सम्पूर्ण सुख, शान्ति और पवित्रता का वर्सा ले सकते हैं और उसकी रची सतयुगी दैवी सृष्टि में नर- से श्री नारायण और नारी से श्री लक्ष्मी पद पा सकते हैं और इन पाँच विकारों को जीतने और पवित्र तथा योगी बनने के पुरूषार्थ में लग जाते है अगर आज सभी मनुष्य मात्र अपने स्वधर्म को पहचानकर आत्म निश्चयबुद्धि बन जाये तो सारी दुनिया के लड़ाई झगड़े एक क्षण में समाप्त हो जाये शिव जयन्ति पर शिव परमात्मा का सर्व आत्माओं के प्रति यहीं फरमान है कि इस कल्प के अपने अन्तिम जन्म के भी अन्तिम समय पर पवित्र बनों योगी बनो इसी में सबका कल्याण है याद रहे कि पवित्र अथवा योगी बनने के लिए कोई घर बार छोड़ने की आवश्यकता नहीं।

- ब्रह्माकुमारीज् वार्ता फिचस

www.bkvarta.com